BELIEVERS EASTERN CHURCH
Office of the Metropolitan, Synod Secretariat, St. Thomas Community, Thiruvalla, Kerala, India.

चरवाहे का पत्र

September/October 2023

सभी आर्चबिशप्स और बिशपगण, याजक, डीकन फॉदर, ईवैन्जलिस्ट, ऑर्डर ऑफ सिस्टर्स एवं विश्वव्यापी बिलीवर्स ईस्टर्न चर्च के सभी विश्वासियों को पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में आशिषें और शुभकामनाएँ। आमीन!✠

मसीह में अति प्रियों,

रूपांतरण पर्व के दौरान, हमें याद दिलाया जाता है कि हमारे ऑर्थोडॉक्स मसीही जीवन का लक्ष्य परमेश्वर के ईश्वरीय स्वभाव में अधिकाधिक बदलते जाना है (2 कुरिन्थियों 3:18), और ऐसा होने के लिए, पश्चाताप अनिवार्य है। इस महीने, आइए हम पश्चाताप के कुछ पहलुओं पर थोड़ा और ध्यान दें।

1. पश्चाताप सतत प्रक्रिया है:

जैसा कि कलीसिया के एक प्रसिद्ध संत ने कहा, 'जीने के केवल दो तरीके हैं: या तो हमें पाप नहीं करना चाहिए या, यदि हम पाप करते हैं, तो हमें पश्चाताप करना चाहिए। यही उद्धार का एकमात्र मार्ग है।'

और चूँकि हममें से कोई भी पाप न करने में सक्षम नहीं है, हम में से प्रत्येक को लगातार पश्चाताप करना चाहिए। पश्चाताप में हमारे पुराने राहों को छोड़ने और मसीह के राहों को अपनाने की हमारी इच्छा की आवश्यकता होती है, जैसे कि पवित्र आत्मा हमें दिखाता है हमें कहाँ बदलने की जरूरत है। इसलिए प्रारंभिक कलीसिया के पिताओं ने यीशु की प्रार्थना ''प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र मुझ पापी पर दया कर।'' को दोहराया करते थे। और जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर हमें शुद्ध करके उसकी प्रतिक्रिया देते हैं। संत यूहन्ना बताते हैं कि यह कैसे काम करता है: ''यदि हम अपने पापों को स्वीकार कर लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।'' (1 यूहन्ना 1:9)

2. झूठा पश्चाताप करना बंद करें।

संत यूहन्ना बपतिस्मादाता के समय में धार्मिक यहूदी अपने उद्धार और अनन्त सुरक्षा के लिए अब्राहम के वंश होने पर भरोसा करते थे। इसलिए, उनका पश्चाताप अक्सर झूठा था, और परिणामस्वरूप उनके जीवन में कुछ भी नहीं बदला। संत यूहन्ना बपतिस्मादाता का उन इस्राएलियों के लिए एक संदेश था: ''अपने आप से यह मत कहना कि हमारा पिता इब्राहीम है, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि परमेश्वर इस पत्थरों से इब्राहीम के लिए संतान पैदा कर सकता है।'' (संत लूका 3:8) कभी-कभी हम भी पिछले

आध्यात्मिक अनुभव के बहाने का भी इस्तेमाल करते हैं, निरंतर पश्चाताप के महत्व को नजरअंदाज करते हैं, और हमारे अंदर मौजूद गैर-मसीही व्यवहार के प्रति अंधे हो जाते हैं।

परिणामस्वरूप, हम अपने जीवन के कई क्षेत्रों में आध्यात्मिक रूप से विकसित होने में असफल हो जाते हैं; और हमारे लिए परमेश्वर की योजनाएँ पूरी नहीं हो पाती हैं; हम उन कई प्रतिफलों से चूक जाते हैं जो परमेश्वर हमें देना चाहता है; और हम इस दुनिया में प्रभु यीशु मसीह का उस तरह से प्रतिनिधित्व करने में विफल हो जाते हैं जिस तरह हमें करना चाहिए।

3. सच्चा पश्चाताप: ''पुराने राहों'' को मसीह के जीवन से बदल दें।

क्या यह अफवाह, ईर्ष्या, आलस्य, शिकायत करना, दूसरों की आलोचना करना, बेईमानी, आज्ञा न मानना, अनैतिकता, क्षमा न करना, स्वार्थ, समर्पण की कमी, विद्रोह, लालच, चुगली करना या दिखावा है? शायद आपके ''पुराने तरीके'' इस सूची में नहीं हैं, लेकिन आप जानते हैं कि वे क्या हैं।

सचमुच में पश्चाताप करने और इन गैर-मसीही मार्गों को दूर करने और प्रभु यीशु मसीह में निहित जीवन को धारण करने का निर्णय लें, जैसा कि संत पौलुस ने लिखा है: आइए हम अंधकार के कार्यों को दूर करें और प्रभु यीशु मसीह को धारण करें। अपने जीवन के पूर्व तरीके के संदर्भ में, आप पुराने स्वभाव को त्याग देते हैं और नए स्वभाव को धारण करते हैं, जो कि परमेश्वर की समानता में, सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में बनाया गया है (रोमियों 13:12,14; इफिसियों 4:22, 24)।

मसीह में मेरे प्यारे बच्चों, आइए हम यह कभी न भूलें कि उद्धार एक दैनिक प्रक्रिया है, इसलिए आइए हम 'डरते और कांपते हुए अपने उद्धार को पूरा करने' के लिए हर संभव प्रयास करें। (फिलिप्पियों 2:12)

आइए भारत के मणिपुर में अपने भाइयों और बहनों की सुरक्षा और वहाँ शांति की बहाली के लिए प्रार्थना करना जारी रखें।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शांति और अनुग्रह सदैव आपके साथ बनी रहे।

पवित्र कलीसिया की सेवा में,

मसीह में आपका पिता

अथनेशियस योहान I मेट्रोपॉलिटन

तिथि : 18 अगस्त 2023
स्थान : पवित्र सिनॅड

निर्देश: कृपया यह सुनिश्चित करें कि यह सभी क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवादित है और विश्वासियों के प्रोत्साहन के लिए सभी स्थानीय कलीसियाओं में पढ़ा जाए।